اپریل ۲۰۰۹ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



موسسۂ نور ہدایت، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ۔۳

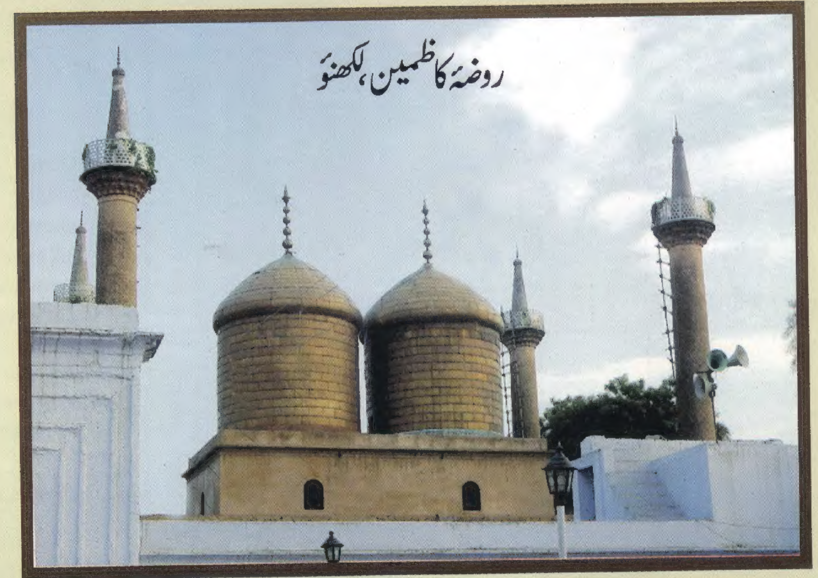
R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk, Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL Lucknow

APRIL 2009

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष-5

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक - 10

अप्रैल - 2009

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
"लखनऊ"

वार्षिक - 200 रु मिलने का पता क़ीमत - 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत। फोन न० 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

▼▼▼

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

●●●

WEBSITE:
www.noorehidayat.com
www.al-ijtihaad.com

●●●

E_mail:
noorehidayat.@yahoo.com
noorehidayat.@gmail.com

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः 80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः 60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः 40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः 20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

अप्रैल-2009ई०

रबीउस्सानी - जमादिलऊला 1430हि०

मक़ामे शब्बीरी

सैय्यिदुल उलमा के ख़ुतबे (8)

सैय्यिदुल उलमा^ता०स० की यह तक़रीर मुहर्रम 1372^हि० में प्रोफ़ेसर सै० मसूद हसन रिज़वी साहब की कोठी, दीन दयाल रोड, लखनऊ में हुई।

हक़ीक़ते अबदी है मक़ामे शब्बीरी
बदलते रहते हैं अन्दाज़े कूफ़ियो शामी

यह इस्लाम के मशहूर मुफ़क्किर शायर डाक्टर इक़बाल का मशहूर शेअ्र है।

हक़ीक़त ये है कि हक़ीक़त होना ख़ुद अबदी होने का ज़िम्मेदार है। हक़ीक़त वक़्त की पैदावार नहीं होती। हक़ीक़त इन्क़ेलाबे रोज़गार नहीं बदलती। हक़ीक़त तबीअतों के रुजहानों के साथ अलग-अलग नहीं होती। "अगर हक़ इन्सानी चाहतों की पैरवी करने लगे तो ज़मीन और आसमान और सब चीज़ें ऊपर-नीचे हो जाएं"।

हक़ एक सीधी लकीर होता है और सीधी लकीर दो नुक़्तों के बीच एक ही हो सकती है। बातिल इधर-उधर के निशान होते हैं जो बहुत से हो सकते हैं।

हक़ अल्लाह तआला के बेहतरीन नामों में से है। आप कहते हैं "हक़ सुब्हानहू व तआला" वह हक़ इसी लिए है कि साबित है इधर-उधर नहीं होता।

मक़ामे शब्बीरी भी हक़ीक़ते अबदी इसी लिए है। बदल सकता है वह शख़्स कि जो जज़्बात का पाबन्द हो, वक़्ती सियासत अपना चोला बहुत जल्दी-जल्दी बदल सकती है मगर वह ज़ात जो मक़ामे ताअत में ऐने हक़ बन गई हो ऐसे इन्सान में बदलाव नहीं हो सकता।

हक़ बाँटा नहीं जा सकता और फिर न बढ़ाये जाने वाली चीज़ है। इसलिए इसमें ज़र्रा बराबर भी बदलाव मुमकिन नहीं है। अगरचे शायर ने शेअर की ज़रूरत से सिर्फ़ "अबदी" कहा है मगर हक़ीक़त में वह अज़ली भी है। मक़ामे शब्बीरी अज़ली और अबदी दोनों हैं। इसलिए कि वह मुजस्सम दीन है और अल्लाह का दीन अज़ल से एक है और अबद तक एक ही रहेगा। "इन्नद्दीना इन्दल्लाहिल इस्लाम" यह दीन नाम है सिर्फ़ हक़ीक़ी माबूद के सामने सर झुकाने का, आदम^अ०, नूह^अ०, इब्राहीम^अ०, मूसा^अ०, ईसा^अ० और दूसरे सभी नबी^अ० सब इसी की तालीम देते थे। ये और बात है कि लोगों की समझ के हिसाब से इसके पैमाने में बदलाव होता गया।

जैसे एक इल्म हासिल करने वाला बच्चा स्कूल में दाख़िल हो, अरबी, अंग्रेज़ी जिस तालीम में जाए पहले दर्जे से आख़री दर्जे तक उसका इरादा असल में एक ही है। और आख़री दर्जे की तालीम उसे अचानक दी जाए तो बच्चे का ज़हन कहाँ क़ुबूल कर सकता है। इसलिए हर दर्जे का कोर्स अलग-अलग है मगर वह अलग-अलग और टकराता नहीं है। इसी तरह पिछले नबियों की तालीमात हैं और उनका आख़री सबक़ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा^स० की तालीम है जो इस्लाम के नाम से सामने आयी। "मक़ामे शब्बीरी" भी बस यही था। हक़ीक़ी माबूद से हटकर किसी दूसरे के सामने सर झुकाने से इन्कार।

तागूते बातिल (सरकश) इन्सान की पैदाईश के पहले ही दिन से हर ज़माने में हक़ को दबाने की कोशिश करता रहा। अगर माद्दी ताक़त के मुक़ाबले में हक़ दबा दिया गया होता तो आज दुनिया में हक़ का वजूद न होता। अगर नबी मुख़ालेफ़तों की सख़्ती से घबराकर चुप हो जाया करते तो आज दुनिया में अच्छी बातें हमारे सामने नहीं होतीं।

हक़ का पैग़ाम पहुँचाने का रास्ता हमेशा काँटों भरा रहा। मगर हक़ वालों ने कभी हार नहीं मानी। न

नमरूद के सामने इब्राहीम[अ०] ने सर झुकाया, न फ़िरऔन के सामने मूसा[अ०] ने और न अबूजहल के सामने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] ने। फिर हुसैन[अ०] यज़ीद के सामने सर क्यों झुकाते?

एक परेशानी वाला रास्ता ऐसा हो जिस पर अभी तक किसी ने जाने की हिम्मत नहीं की तो उस पर चलने का इरादा करना भी मुश्किल होता है लेकिन अगर कुछ राह चलने वालों के निशान मौजूद हों तो हिम्मत बढ़ती है।

इतनी मिसालें आँखों के सामने आने के बाद भी तो आज हक़ के रास्ते पर चलने में हमारे क़दम थर्रा जाते हैं। कितने ही हैं जो ज़रा सख़्ती से क़दम उठाकर सही रास्ते से हट जाते हैं। हालांकि हमारे सामने पूरी तारीख़ है जिसे हमारे बुज़ुर्गों ने पसीने और आँसू और ख़ून से तैयार किया है फिर भी तो हमारे पाँव उखड़ जाते हैं। अगर ये मिसालें हमारे सामने न होतीं तो कौन होता जो हक़ पर बाक़ी रहे?

याद रखिये कि दुनिया में जो कभी इन्साफ़, मसावात और बराबरी, इन्सानी हुक़ूक़ या ईसार वग़ैरा की आवाज़ें सुनने में आ जाती हैं। यह एहसान है सिर्फ़ उन्हीं हक़ की दावत देने वालों का। वरना माद्दियत का तो फ़लसफ़ा यह है कि इस दुनिया का निज़ाम "तनाज़ो लिलबक़ा" (बाक़ी रहने के लिए मुक़ाबला करना) की बुनियाद पर है। बड़ा पौधा छोटे को खा जाता है। बड़ा जानवर छोटे जानवर को खा जाता है तो ताक़तवर इन्सान कमज़ोर को फ़ना के घाट क्यों न उतार दे। ये ताक़त की बुनियाद पर उसका हक़ है। इस फ़लसफ़े की बुनियाद पर तो ज़ुल्म, ज़ुल्म नहीं रहता और अद्ल का कोई मतलब नहीं होता। अब अगर इसके बावदजूद इन्साफ़ और अद्ल की आवाज़ें ज़हनों से बलन्द होती हुई नज़र आती हैं तो मानना चाहिए कि सिर्फ़ उन्हीं दीनी रहनुमाओं की तालीम का असर है जो समझ में न आने पर इन्सानी दिमाग़ में छा गया है। दुनिया लाख पलटे खाये। आसमान और ज़मीन के दरमियान बेशुमार बदलाव होते रहें मगर हक़ न बदलेगा, हक़ न बदलेगा तो मक़ामे शब्बीरी न बदलेगा।

हक़ की जितनी निशानियाँ हैं वह कभी वक़्त के साथ नहीं बदलतीं। अली इब्ने अबी तालिब[अ०] का तक़वा और दुनिया को छोड़ना 25 साल की ख़ाना नशीनी के ज़माने में ऐसे समझा जा सकता था कि यह बेबसी का नतीजा है मगर जब आपको जमहूरी तौर पर भी इस्लामी ख़लीफ़ा मान लिया गया और ज़ाहिरी हुकूमत का तख़्त भी आपके क़दमों में आ गया उस वक़्त भी दुनिया ने देखा वही पेवन्द वाली क़बा है, वही जौ का भूसी मिला हुआ आटा आपका खाना है, जो बदलाव हुआ था वह आम लोगों में था कि वह पहले आपको ख़लीफ़ा नहीं मानते थे और अब मानने लगे थे मगर आप में ज़र्रा बराबर भी बदलाव न हुआ था।

मामून रशीद ने इमाम रिज़ा[अ०] को बनी अब्बास की हुकूमत का वलीअहद क्यों बनाया था? सिर्फ़ इस ख़याल की बुनियाद पर क्योंकि इन शख़सियतों का तक़वे और दुनिया से अलग होने की ख़ूबियों की वजह से मख़लूक़ पर असर था तो मामून ने अपनी नीच सोच की वजह से दुनिया को यह तजरबा कराना चाहा था कि देखो ये भी जब दुनिया में पड़ जायें तो तमाम तक़वा और सागदी ख़त्म हो जाए मगर इस तजरबे का नतीजा उलटा हुआ यानी दुनिया ने आँखों से ये देखा कि यह हुकूमत के सबसे बड़े रुक्न होने के बाद भी अपने मकान पर चटाई ही पर बैठते थे। इनका खाना और कपड़े वही है जो पहले था। इसकी वजह से उनकी रूहानियत का दिलों पर और ज़्यादा असर बढ़ने लगा। इसकी काट थी जो फिर बाद में हज़रत को ज़हर देकर की गई। मालूम हुआ कि यह अबदी हक़ीक़त के वह अमली नमूने हैं जिनमें वक़्त के साथ बदलाव नहीं होता।

रसूलुल्लाह[स०] के किरदार की ख़ास ख़ूबी जो दुनिया में नज़र आती थी क्या थी? सच्चाई और अमानतदारी। आपका लक़ब ही सादिक़ और अमीन हो गया था। 40 साल तक इन ख़ूबियों की बुनियाद पर वह हरदिल अज़ीज़ी रही कि पूरी क़ौम आपके लिए आँखें बिछाती थी मगर जब हक़ के पैग़ाम की आवाज़ बलन्द की कि ख़ुदा को एक मानो, बुतों की पूजा छोड़ दो तो पूरी क़ौम दुश्मन हो गई मगर मुश्रिकों की अमानतें आप[स०]

के पास हिजरत की रात तक थीं यहाँ तक कि जब सब एक हो गये कि रात को आपकी ज़िन्दगी का ख़ात्मा कर दें तब भी यह ख़याल नहीं हुआ कि पहले अमानतें वापस ले लो। ख़ून बहाने पर तैयार थे मगर अपनी अमानतों की हिफ़ाज़त का यक़ीन था और आपने उनकी अमानतों की हिफ़ाज़त के लिए यहाँ तक किया कि अपनी गोद के पाले और अपनी जान से ज़्यादा अज़ीज़ भाई को ख़तरे में डाल दिया मगर कह दिया कि ऐ अली! जब तक मुश्रिकों की अमानतें उनको वापस न कर देना मक्का न छोड़ना।

मालूम होता है कि यह वह हस्तियाँ हैं जिनमें बदलाव नहीं होता। दोस्त हो या दुश्मन हर हाल में अमानतें हैं और उनकी हिफ़ाज़त ज़रूरी है।

यही ख़ूबियों की बलन्दी की वह मन्ज़िल होती है जहाँ दोस्त और दुश्मन सबको एक ही तरह सर झुकाना पड़ता है। हुसैन[अ०] ऐसी ही ख़ूबियों वाले थे चुनानचे एक बार जब आपने अमीरे शाम मुआविया को एहतेजाजी ख़त लिखा और उस ख़त को पढ़ कर उन्हें बुरा लगा तो दरबारियों में से किसी ख़ुशामदी ने कह दिया कि आप भी हुसैन[अ०] को ऐसा ख़त लिख दीजिये जो उनकी नज़र में ख़ुद उनको नीचा कर दे तो अमीरे शाम ने कहा कि तुमने कुछ सही मश्वरा नहीं दिया इसलिए कि जो कुछ मैं उन्हें लिखूँगा वह अगर ग़लत है तो उसके लिखने पर मैं ख़ुद ही नीचा हूँगा और अगर सही लिखना चाहूँ, तो बुराइयाँ पाऊँ कहाँ से, जो उनके बारे में उनको लिखूँ।

यह हक़ीक़त का मक़ाम है जो न बदलने के साथ-साथ यह भी है कि इज़ाफ़ी नहीं है। इज़ाफ़ी का मतलब यह है कि जैसे किसी अज़ीज़ की निस्बत इन्सान बड़ा एहसान करने वाला है मगर ग़ैर की निस्बत वह एहसान नहीं है तो वह अच्छाई उसके हिसाब से है मगर इसके लेहाज़ से नहीं इसके ख़िलाफ़ वह अच्छाई जो ग़ैर इज़ाफ़ी हो यह है कि हर एक की बनिस्बत और हर एक के सामने वह क़ायम रहे।

इसी का नतीजा था कि जब यज़ीद ने बैअत के लिए वलीद बिन उक़बा के पास ख़त लिखा तो अगरचे वलीद ख़ुद भी बनी उमैय्या में से बल्कि आले अबूसुफ़यान में से था यानी यज़ीद का चचाज़ाद भाई था और उसकी तरफ़ से मदीने का हाकिम था मगर उसने भी हुसैन[अ०] से बैअत के मुतालबे को हक़ नहीं समझा और जब मरवान ने मश्वरा दिया कि बैअत न करें तो अभी सर काट दो तो वह इस मश्वरे पर अमल करने से मजबूर रहा और जब मरवान ने बुरा-भला कहा कि तुमने मेरा कहा न माना अब हुसैन[अ०] पर पकड़ पाना मुश्किल है तो वलीद ने यह जुमले कसे जो तबरी में लिखे हैं कि "मैं अमल कैसे करता तुमने तो मुझे ऐसी राय दी जिस पर मेरे दीन की बर्बादी है।" इसके बाद वह कहता है कि "ख़ुदा की क़सम जो हुसैन[अ०] के क़त्ल के जुर्म में गिरफ़्तार होगा उसकी भलाइयों का पल्ला क़यामत के दिन बहुत ही हल्का होगा।

इसी तरह नोमान बिन बशीर कूफ़े का हाकिम, इमाम हुसैन[अ०] के भेजे हुए मुस्लिम इब्ने अक़ील के मुक़ाबले में यज़ीद की चाहत को पूरा करने से क़ासिर रहा।

यह नतीजा था उसी हक़्क़ानियत का जो हुसैन[अ०] में उनकी मुख़ालिफ़ जमाअत के समझदार लोगों को भी महसूस होती थी। ख़ुद उमरे साद ने जो कर्बला में इमाम हुसैन[अ०] के मुक़ाबले में फ़ौज का अफ़सर बनाकर भेजा गया था साफ़-साफ़ इक़रार किया कि इमाम हुसैन[अ०] का तरीक़ा अम्न और सुलह की बुनियाद पर है और यह कि यज़ीद से बैअत की उम्मीद आपसे बेकार है।

यह "मक़ामे शब्बीरी" वही साबित क़दमी है जिसकी मिसालें इब्राहीम[अ०], मूसा[अ०], ईसा[अ०] सब ही के यहाँ नज़र आयीं यह और बात है कि इनके मुक़ाबले में मुश्किलें और मुसीबतें इतनी नहीं आयीं जितनी हुसैन[अ०] के सामने आ गयीं इसलिए हुसैन[अ०] का रास्ता सबसे बलन्द नज़र आता है।

हक़ पर डटने का नाम अगर "ज़िद" है तो जितने नबी थे सब बहुत ही ज़िद्दी थे। उन नबियों का क्या बयान ख़ुद दुनिया बनाने वाले से बढ़कर ज़िद्दी कौन हो सकता है कि जो नबी आता है क़त्ल हो जाता है, जो रसूल भेजा जाता है उसको झुठला दिया जाता है और तरह-तरह से तकलीफ़ें पहुँचायी जाती हैं मगर वह

था कि नबी भेजता ही जाता है और दीन का रास्ता बताने वालों का सिलसिला बराबर क़ायम रखा और एलान कर दिया कि तुम अल्लाह के तरीक़े में तबदीली और इन्क़ेलाब कभी न पाओगे।

बातिल अपने मुक़ाबले में हक़ को दबाने की तरह-तरह से कोशिश किया करता है। इसका भी मक़सद एक है यानी हक़ को दबाने की कोशिश करना जिसके कमाल की निशानी शायर ने "कूफ़ी और शामी" के अलफ़ाज़ में अदा किया है। यह "कूफ़ी और शामी" नाम है बातिल वालों का। इनके अन्दाज़ हक़ को मिटाने की कोशिश में बदलते रहते हैं। नमरूद की आग, फ़िरऔन के मज़ालिम, यह्या का सर काटा जाना, ज़करिया को आरे से चीर डालना, जरजीस को खौलते हुए तेल के कढ़ाव में डाल कर उबालना, फिर हज़रत ख़ातमुल अम्बिया^{स०} को तरह-तरह की तकलीफ़ें पहुँचाना, दूसरे दीनी रहनुमाओं के मुँह के सामने ज़हर के प्याले और कभी गर्दनों पर खिंची हुई तलवारें। यह सब वह कूफ़ी और शामी अन्दाज़ थे जो शब्बीरी मक़सद के सामने आते हैं।

हक़ीक़त बदली नहीं जा सकती मगर बातिल अपनी बात पर टिका नहीं रह सकता क्योंकि हक़ का इक़रार ज़मीर के दबाव से बातिल वालों को अकसर करना ही होता है।

रसूल[स०] की अमानतदारी का अमली इज़हार मुश्रिकीन ने दुश्मनी के बाद भी अपनी अमानतें हिजरत की रात तक रसूल[स०] के पास रखवा कर किया। यह बातिल की तरफ़ से हक़ की ताक़त का इक़रार था।

हुसैन[अ०] के हक़ पर होने का भी बातिल वालों को यक़ीन था। वलीद कूफ़ी और शामी हुकूमत का नुमाइन्दा था मगर आपने देखा उसने इक़रार किया कि जो हुसैन[अ०] को क़त्ल करेगा वह क़यामत के दिन नाकाम और नामुराद होगा।

इब्ने साद भी उसी ताक़त का सरदार था मगर उसे हक़ से असर लेते हुए बार-बार अपना मरकज़ छोड़ना पड़ता था। शामी फ़ौज का हुसैनी जमाअत की चन्द लोगों के सामने भागना क्या था? अपने मरकज़ से बार-बार घबराना ही था और फिर उमवी हुकूमत के मुक़ाबले में जमहूर का ग़ुस्सा क्या था? हालांकि देखिये तो जमहूर सब ही कूफ़ी और शामी बन चुके थे मगर उन पर यह असर भी कमज़ोर था। इसलिए उनमें से बहुत से लोगों में मुस्तक़िल बदलाव हो गया।

हुसैन[अ०] की जंग ही यही थी। वह बातिल की सोंच को हराने के लिए आये थे चुनानचे अपने साथ ऐसे ही सामान लाये थे जो इन्सानी ज़हन को जगा सकें।

हुसैन[अ०] की आँखों के सामने उनकी जीत के आसार नज़र आ रहे थे। हुर का मुख़ालिफ़ फ़ौज से इधर आ जाना उनकी जीत का नाक़ाबिले इन्कार सुबूत था।

और फिर जो कूफ़ी और शामी जंग को दुनिया की चाहत की वजह से बिल्कुल न छोड़ सके उनके भी हालात से उनका घबराना नज़र आ रहा था।

हुसैन[अ०] के क़त्ल के वक़्त कई ज़ालिमों का तलवारें फेंक-फेंक कर भागना क्या था? हुसैन[अ०] की शहादत के बाद लूट के वक़्त किसी शहज़ादी के पैरों से पाज़ेब उतारना मगर उसके साथ रोते जाना क्या था?

सबसे बड़ा ज़िम्मेदार यज़ीद बदला कि नहीं? जंग आमने-सामने काहे की थी? बैअत की चाहत ही तो थी और हुसैन[अ०] से बैअत की चाहत एक शख़्स की तो न थी बल्कि रसूल[स०] के ख़ानदान के नुमाइन्दे की हैसियत से थी। मगर यही हैसियत हुसैन[अ०] के बाद ज़ैनुलआबिदीन[अ०] को हासिल हो गई थी और वह यज़ीद की बातिल ताक़त के घेरे में उसके दरबार के अन्दर मौजूद थे। मगर यज़ीद को अब इतनी हिम्मत न थी कि वह सैय्यदे सज्जाद[अ०] से बैअत का मुतालबा करता बल्कि हुसैन[अ०] के किसी एक बच्चे से यह न कह सका कि बैअत कर लो।

हुसैन[अ०] और उनके बाद उनकी औलाद अपने मक़सद से ज़र्रा भर कभी नहीं हटी और यज़ीद ख़ुद ही अपनी ज़िद से मजबूर होकर बैठ गया। सच कहा है "इक़बाल" नेः

हक़ीक़ते अबदी है मक़ामे शब्बीरी
बदलते रहते हैं अन्दाज़े कूफ़ी व शामी



इमामत का मसअला

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी साहब क़िब्ला

शियों के हिसाब से हर दौर और हर ज़माने में अल्लाह की तरफ़ से तय किये हुए किसी न किसी मासूम का वजूद ज़रूरी है जो दीन की हिफ़ाज़त करने वाला हो, लोगों को शरीअत के अहकाम और दीनी अक़ीदों की तालीम दे, दीन में बदलाव और इख़्तेलाफ़ पैदा करने वालों से दीन की हिफ़ाज़त करे और इख़्तेलाफ होने की हालत में सही तालीम से लोगों को बाख़बर करे।

यह सिलसिला आख़री नबी[स०] तक नबियों और रसूलों की सूरत में चलता रहा। इनमें से कुछ शरीअत वाले थे जो अल्लाह के पैग़ाम बन्दों तक पहुँचाते थे और कुछ शरीअतों की हिफ़ाज़त करने वाले थे। सबसे पहले शरीअत वाले पैग़म्बर जनाबे नूह[अ०] और आख़री हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] थे आपकी ज़ात पर दीन कामिल और नुबुव्वत मुकम्मल हो गयी। अब न कोई नई शरीअत आएगी और न कोई नबी आएगा। लेकिन जिस तरह दो शरीअत वाले पैग़म्बरों के बीच शरीअत की हिफ़ाज़त के लिए नबियों को अल्लाह की तरफ़ से तैय किया जाता रहा उसी तरह रसुले ख़ुदा[स०] के बाद आपकी औलाद में से कुछ बड़े मरतबे वाले लोगों को एक के बाद एक अल्लाह तआला ने इस्लाम की हिफ़ाज़त और मदद के लिए तैय फ़रमाया है। जिनका काम दीन के सही मतलब से लोगों को पहचनवाना और उसकी हिफ़ाज़त करना है। जिनकी पहचान रिसालतमआब[स०] ने कभी तफ़सील से और कभी मुख़्तसर तौर पर अपनी हदीसों के ज़रिये करवायी और हर इमाम अपने बाद वाले इमाम को पहचनवाता रहा। इस सिलसिले के पहले इमाम अली इब्ने अबी तालिब[अ०] थे और आख़री वही इमाम महदी[अ०] हैं जिनके आने की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) रसूले ख़ुदा[स०] अपनी मुत्तफ़क़ अलैह हदीसों में फ़रमाते रहे हैं। जो उस वक़्त ज़ाहिर होंगे जब ज़मीन ज़ुल्मो सितम से भर चुकी होगी। (पहली सदी हिजरी से तक़रीबन हर सदी में महदवियत के दावेदार पाये जाना या कुछ लोगों के महदी होने का अक़ीदा और इन दावा करने वालों की मुख़ालेफ़त करने वालों को असल महदवियत के अक़ीदे को रद्द न करना इसकी दलील है कि हर दौर में यह अक़ीदा कि एक ऐसे शख़्स जिसका लक़ब महदी होगा और जो इन्साफ़ और बराबरी को आम करेगा इजमाई और इस्लाम की बुनियादों में से है।) यह रसूल[स०] के आख़री नायब इन्साफ़ और बराबरी को आम करेंगे। इनके झण्डे के नीचे पूरी दुनिया तौहीद और रिसालत का कलमा पढ़कर मुसलमान हो जायेगी। इस्लाम के सिवा दुनिया में कोई दीन बाक़ी नहीं रहेगा। यह ख़ुलासा है उन पेशीनगोइयों का जो सभी मुसलमानों में साबित हैं। अभी कुछ साल पहले मोअ्तमिरे इस्लामी की फ़िक़्ही कमेटी का फ़तवा सबके सामने आ चुका है कि महदी मौऊद का अक़ीदा रखना जो फ़ातिमा[स०] की नस्ल से होंगे, ज़रूरी है क्योंकि सही हदीसें इस बारे में मौजूद हैं जिनका इन्कार मुमकिन नहीं है।

अहलेसुन्नत और शियों की हदीसें इस बारे में भी एक हैं कि उसी ज़माने में जनाबे ईसा[अ०] भी ज़ाहिर होंगे और यह बुज़ुर्ग पैग़म्बर उसी नाएबे रसूल[स०] के पीछे नमाज़ पढ़ेंगे।

चूँकि यह इमाम[अ०] उस रसूल[स०] के नायब हैं जो सैय्यिदुल मुर्सलीन और अशरफ़ुन्नबिय्यीन हैं जिस पर

आयते करीमा *"इज़ अख़ज़ल्लाहु मिसाक़न्नबिय्यीन"* की एक तफ़सीर की बुनियाद पर तमाम पिछले नबियों से ईमान लाने का अहद लिया गया था यह उसी कामिल दीन और आख़री शरीअत की हिफ़ाज़त करने वाले हैं जो पिछली सभी शरीअतों से अफ़ज़ल और बेहतर है इसलिए इनका मर्तबा पिछले नबियों से बलन्द है। (जैसा कि जनाबे ईसा[अ०] के आख़री इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने से पता चलता है)

रसूले ख़ुदा[स०] की वह हदीस जिसे इस्लाम के दोनों गिरोह मानते हैं कि "मैं तुम में दो क़ीमती चीज़ें छोड़े जाता हूँ एक ख़ुदा की किताब दूसरे मेरे अहलेबैत, जब तक इन दोनों से जुड़े रहोगे कभी गुमराह न होगे। और यह दोनों कभी भी एक दूसरे से अलग न होंगे यहाँ तक कि मेरे पास हौज़े कौसर पर पहुँच जाएं" इन से जुड़े रहने को नजात की शर्त क़रार देती है।

इन्हीं अहलेबैत के बारे में रिसालतमआब का इरशाद है "मेरे अहलेबैत की मिसाल नूह[अ०] की कश्ती की जैसी है जो भी इसमें सवार हुआ उसने नजात पाई और जो इससे दूर रहा वह डूबा और हलाक हुआ यानी जिस तरह हलाकत से नजात नूह[अ०] की कश्ती में थी उसी तरह सिर्फ़ वही नजात हासिल कर सकेंगे जो अहलेबैत[अ०] से जुड़े रहेंगे।

यह हदीसें इतनी मश्हूर हैं कि किसी भी समझदार के लिए इन्कार मुश्किल है इसलिए हवालों की ज़रूरत नहीं महसूस होती। अगर ज़्यादा तहक़ीक़ मन्जूर हो तो हदीक़-ए-सुल्तानिया या अबक़ातुल अनवार देख सकते हैं। ⌘⌘⌘

फ़ुरू-ए-दीन

मौलाना सै0 इब्ने हसन जारचवी साहब क़िब्ला

जेहाद

अल्लाह! अल्लाह! जेहाद के बारे में दुनिया की सोच कितनी ग़लत है। जहाँ यह लफ़्ज़ मुँह से निकला नेज़े, तलवारें, हथियारबन्द सिपाही, तड़पती हुई लाशें और ख़ून के बहते हुए दरिया नज़र के सामने आने लगे। क्या यही जेहाद है? सादिक़े आले मुहम्मद[स॰] ने जेहाद की चार क़िस्में बतायी हैं, जिनमें से दो फ़र्ज़ हैं। इन्सान का अल्लाह की नाफ़रमानियों से बचने के लिए अपने नफ़्स से जेहाद करना, ये सबसे बड़ा जेहाद है। जो काफ़िर मुसलमानों पर हमला करते हों उनसे बचाव के लिए जेहाद करना। अगर दुश्मन मुसलमानों पर हमला करे तो मुसलमानों पर बचाव करना वाजिब है। अगर मुसलमान बचाव से हटें तो अकेले इमाम पर सुन्नत है कि मुसलमानों के साथ दुश्मन से लड़े। किसी मिटी हुई सुन्नत को दोबारा जारी करना सबसे अच्छा अमल है, और ये जेहाद भी सुन्नत है।''

दूसरी हदीस में इरशाद होता है कि एक बार ख़ुदा के रसूल[स॰] ने मुसलमानों को किसी जंग पर भेजा। जब वह वहाँ से वापस हुए तो फ़रमायाः ''उस गिरोह का आना मुबारक हो जो छोटे जेहाद को पूरा कर चुका, और बड़ा जेहाद अभी बाक़ी है।'' किसी ने पूछा ''ऐ ख़ुदा के रसूल[स॰] बड़ा जेहाद क्या है?'' फ़रमायाः ''नफ़्स का जेहाद''

असल में नासमझी की वजह ये है कि लोगों ने जेहाद और ख़ून-ख़राबे के मतलब को एक ही समझ लिया है। जबकि जेहाद का मतलब मेहनत और कोशिश करना है।

इस्लाम जिस वक़्त दुनिया में आया तो आदम की औलाद दो हिस्सों में बटी हुई नज़र आती थी। एक वह जो दुनिया वाले कहलाते थे और अपने आपको बाक़ी रखने की कोशिश में मर्दानगी दिखाते हुए हिस्सा लेते थे। इनके मुक़ाबले में दूसरा गिरोह दीनदारों का था जो ख़ानख़ाहों, ग़ारों, कलीसाओं में बेअमली की ज़िन्दगी गुज़ारने को नजात पाने वाली और हाथ पैर चलाकर कमाने खाने को गुनाह और बुराई समझता था। इस्लाम ने आकर सुस्त और सन्यासी लोगों को बताया कि दीन बेअमली का नाम नहीं है, बल्कि वह पूरा का पूरा मुक़ाबला और मुजाहेदा करने का नाम है।

''ईमान वालों में से जिनको कोई जिस्मानी मजबूरी न हो और फिर (घर में हाथ पर हाथ रखे) बैठे रहें और वह जो ख़ुदा के रास्ते में अपनी जान और माल से जेहाद कर रहे हों बराबर नहीं, अल्लाह ने अपनी जान और माल से जेहाद करने वालों को घर बैठ रहने वालों पर दर्जे के हिसाब से फ़ज़ीलत अता की है। और हर एक से ख़ुदा ने भलाई का वादा किया है। और जेहाद करने वालों को घर बैठ रहने वालों पर बड़े इनाम की फ़ज़ीलत बख़्शी है।'' (निसा-95)

अल्लाह ने मोमिनों की निशानी ये बतायी है कि वह जान और माल से अल्लाह के कलमे को बलन्द करने के लिए कोशिश करता रहे।

''मोमिन वही है जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाये और फिर उसमें शक और शुब्हा न

किया और अपने माल और जान से ख़ुदा के रास्ते में जेहाद किया।''

(हुजरात-15)

जो लोग अल्लाह के रास्ते में कोशिश करते हैं, ख़ुदा उन पर तरक़्क़ी के नये-नये रास्ते खोलता रहता है।

''और जो हमारे रास्ते में कोशिश करते हैं हम उनके लिये अपने और रास्ते भी खोलते रहते हैं।''

(अनकबूत-69)

बेशक हक़ की हिमायत में लड़ना भी जेहाद है। और मुहम्मद[स०] व आले मुहम्मद[अ०] ने ज़्यादा तर जान बचाने और ईमान की हिफ़ाज़त करने के लिए जंग की है। मगर जैसा कि इस किताब में बारबार बयान हुआ है उनकी जंगें बिला वजह मुल्कों पर क़ब्ज़ा करने और लूटमार के लिये नहीं थीं।

''जान की हिफ़ाज़त'' काएनात का हमेशा का क़ानून है। और इस पर अमल करना फ़ितरत की वजह से है। इस्लाम अगर बचाव करने के लिए भी जंग की इजाज़त न देता तो इन्सानी दीन कहलाने का मुस्तहक़ न बनता।

यह इस्लामी ख़याल की बलन्दी है कि वह मज़लूमों की बचाव की जंग को इबादत का दर्जा देता है:

''फिर जिन्होंने अपना (घर बार छोड़कर) हिजरत की, और अपने घरों से निकाले गये, और मेरे रास्ते में सताये गये और उन्होंने जंग की और क़त्ल हुए, तो मैं उनके गुनाहों को मुआफ़ कर दूँगा और उनको जन्नत में दाख़िल करूँगा।'' (आले इमरान-190)

मुसलमानों की क़ातिलाना लड़ाईयों के बारे में आले मुहम्मद[अ०] की राय

मुसलमान बादशाहों ने अरबी तहज़ीब और हुकूमत को फैलाने के लिए जो लड़ाईयाँ लड़ीं आले मुहम्मद ने उनमें कभी हिस्सा नहीं लिया। वह समझते थे कि इस्लाम दुनिया में इसलिए नहीं आया कि वह एक को दूसरे का गुलाम बनाने में मदद दे।

बनी उमैय्या के ज़माने में जब मुसलमानों की हुकूमत का सैलाब एशिया और अफ़्रीक़ा से गुज़र कर यूरोपी मुल्कों तक पहुँच चुका था, जब जीते हुए मुल्कों की दौलत सिमट-सिमट कर अरबों के घरों में आ रही थी, जब हर वह शख़्स जो हाथ में तलवार रखता था किसी न किसी इलाक़े ज़िम्मेदार, किसी न किसी फौज का अफ़सर बनने और इतनी दौलत इकटठा करने की आरज़ू रखता था जो उसकी पुश्तों के लिए काफ़ी हो।

''एक शख़्स ने इमाम ज़ैनुलआबिदीन अलैहिस्सलाम को ताना दिया कि आप हज तो बराबर करते हैं कि वह एक आसान काम है मगर जेहाद की सख़्ती से घबराकर उसमें हिस्सा नहीं लेते, हालांकि क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला का ये इरशाद मौजूद है:

''बेशक अल्लाह ने ईमान वालों से उनके जान और माल जन्नत के बदले में ख़रीद लिये हैं वह अल्लाह के रास्ते में मुक़ाबला करते हैं। मारते हैं और मरते हैं। यह वह वादा है जो तौरेत, इन्जील और क़ुरआन में उसने अपने ऊपर लाज़िम किया है। और अल्लाह से ज़्यादा वादे का पूरा करने वाला कौन होगा। बस उस सौदे पर जो तुमने किया है मगन रहो कि यह बड़ी कामयाबी है।''

(तौबा-112)

हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन[अ०] ने फ़रमाया कि ज़रा इस आयत को पूरा तो पढ़िये। उसने पढ़ना शुरु किया:

''यह वह लोग हैं जो तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, ख़ुदा की तारीफ करने वाले, रोज़े रखने वाले, (या ख़ुदा के रास्ते में सफ़र करने वाले) रुकू और सजदे करने वाले, नेक कामों का हुक्म देने वाले, बुरे कामों से रोकने वाले और अल्लाह की तैय की हुई हदों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। ऐसे ही मोमिनों को ख़ुशख़बरी दो।'' (तौबा-112)

हज़रत ने फ़रमाया जब इन ख़ूबियों के लोगों को हम जेहाद करता हुआ पायेंगे तो यक़ीनन उनके साथ शामिल होंगे कि उस वक़्त जेहाद करना हज से बेहतर होगा।'' (काफ़ी किताबुल जेहाद)

ग़ौर कीजिये और हज़रत के इरशाद का मज़ा लीजिये कि आपने किस ख़ूबसूरती से उस ज़माने की हुकूमत और उसके काम करने वालों के हालात पर रौशनी डाली है; और इस तरह हमको यह तालीम दी है कि हर वह सिपाही जो लूटमार और क़त्ल व बर्बादी के लिए किसी मुल्क पर जा चढ़े ''अल्लाह के रास्ते में जेहाद करने वाला'' नहीं बन जाता।

क्योंकि ख़ुदा के नज़दीक कामयाबी और जीत के बाद मुसलमानों का फ़र्ज़ लूटमार के बजाये इस्लामी क़ानून को फैलाना, बुरी बातों को दूर करना और अच्छी बातों को रवाज देना है।

''वह लोग कि अगर हम उनको ज़मीन पर क़ब्ज़ा दे दें तो वह नमाज़ को क़ायम करें, ज़कात अदा करें, अच्छी बातों का हुक्म दें और बुरी बातों से रोकें।'' (हज-41)

आदाबे जेहाद

नीचे हज़रत अली अलैहिस्सलाम के दो हुक्म पढ़िये और अन्दाज़ा लगाइये कि तलवार से जेहाद में बचाव की हदों का कितना ख़याल और बग़ैर ज़रूरत ख़ून-ख़राबे से किस हद तक बचा जाता था।

''जब तक वह ख़ुद (जंग की शुरुआत) न करें उनसे न लड़ो, क्योंकि एक हुज्जत पर तो तुम (पहले ही से) क़ायम हो, अब इनकी तरफ से छोड़छाड़ शुरु होने तक जो इनको अपने हाल पर छोड़ दोगे तो दूसरी हुज्जत भी तुम्हारे हाथ आ जायेगी; और जब ख़ुदा के हुक्म से वह हार जायें तो किसी भागने वाले को क़त्ल न करना, जो अपनी जान बचाने से मजबूर हो उस पर टूट न पड़ना, ज़ख़्मी हो हलाक न करना और औरतों को तकलीफ पहुँचाकर परेशान न करना, अगरचे वह तुमको बुरा भला कहें और तुम्हारे सरदारों को गालियाँ ही क्यों न दें। बात यह है कि वह कम ताक़त, कमज़ोर दिल और कम अक़्ल वाली होती हैं। (अल्लाह के रसूल[स०] ने अपने ज़माने में) हमको हुक्म दिया था कि हम औरतों से कुछ झगड़ा न करें, हालांकि वह औरतें शिर्क करने वाली थीं।''

(नह्जुल बलाग़ह)

उस ख़ुदा से डरो जिससे एक दिन तुमको ज़रूर मिलना है; और जिसके सिवा तुम्हारे लिये कोई ठिकाना नहीं है। और जंग व लड़ाई न करो मगर उस शख़्स से जो तुमसे जंग व लड़ाई करे। सुबह और शाम सफ़र करो कि ये दोनों ठण्डे वक़्त हैं और दोपहर के वक़्त लोगों को ठहरा दिया करो। चलने में आराम और आसानी का ख़याल रखा करो। और रात में सफ़र न करो कि ख़ुदा ने उसको सुकून और ठहरने का वक़्त बनाया है, न कि सफ़र का। बस रात के वक़्त तुम अपने बदन और अपने ऊँटों को आराम दो। फिर जब सहर या फ़ज्र निकल आये तो खड़े हो जाओ और ख़ुदा की बरकत के साथ चलना शुरु कर दो। जब दुश्मन की फ़ौज के क़रीब पहुँचो तो अपने साथियों के बीच ठहरो। दुश्मन की फ़ौज के बिल्कुल क़रीब न हो जाना कि यह तरीक़ा उसका है जो ख़ुद ही जंग को भड़काना चाहता है और न बहुत ज़्यादा दूर ही रहना कि यह तरीक़ा उसका है जो लोगों से डरता है। (इसी हालत में रहना) यहाँ तक कि मेरा हुक्म तुम्हारे पास पहुँचे। देखना ऐसा न हो कि हक़ की तरफ़ दावत देने और कमज़ोरी और हुज्जत पूरी करने से पहले दुश्मनी और हसद तुमको उनसे लड़ने पर तैयार करे।

(नह्जुल बलाग़ह)



मद्हे हज़रत इमाम हसन असकरी[अ०]

बिन्ते ज़हरा नक़्वी नदल हिन्दी साहिबा

रसाई दीदओ दिल की इमामे असकरी[अ०] तक है
हमारा राब्ता बस रौशनी से रौशनी तक है

विलाए असकरी[अ०] पर मरने वाले जी के रहते हैं
इसी मर जाने पर क़ुर्बान खुद से ज़िन्दगी तक है

रहे नेमात ही मज़हब मेरा है सच मैं कहती हूँ
तगो दौ अपनी ऐ मौला! तुम्हारी ही गली तक है

तवातुर से वही हीरों की बोसागाह बनती है
रसाई जिस जबीं की उस गली की कंकरी तक है

वही अल्लाह वाला है वही अहमद को प्यारा है
कि जिसका सिलसिला यारो! दरे आले नबी[स०] तक है

वही अफ़राद मालूमात की दुनिया में जीते हैं
कि जिनकी आमदो शुद इल्म की बारादरी तक है

मुहिब्बे असकरी[अ०] दावे से कहती हूँ बहश्ती हैं
वही दावा जो पहले था वही दावा अभी तक है

अता ख़ालिक़ ने की है ताक़ते "कुन" मेरे मौला को
अदु की रफ़अते परवाज़ बस जादूगरी तक है

दुआ होते ही लो बग़दार जल थल होता जाता है
निज़ामे अबतरी सारे का सारा अब तरी तक है

जो कल बेकल थे अब शादाब हैं बाराने रहमत से
पहुँच अस्वाते ज़िन्दाबाद की दरिया दिली तक है

नदाए आले[अ०] अहमद[स०] को निदाए आसमानी है
असर मिदहत का तेरी सुन! दिले इब्ने अली[अ०] तक है

पैरवे असकरी[अ०] बनो! कैसे हो ज़िन्दगी अबस
उनकी विला अगर नहीं तब तो है वाक़ई अबस

मक्रो हसद शेआर हैं किब्रो रिया पसन्द हैं
इन सिफ़तों की वजह से आज हैं मोलवी अबस

उलफ़ते आले मुस्तफ़ा[स०] दौलते दीनो आख़िरत
इसके बग़ैर हो भी तो सारी तवंगरी अबस

नाम हसन[अ०] है आपका असकरी[अ०] आपका लक़ब
आप अमीरे काएनात, आपसे दुश्मनी अबस

क़हत की ज़द में लोग हैं क़हत की ज़द में दीन है
दोनों जहाँ में क्यों कहीं आज है खलबली अबस

दस्ते दुआए असकरी[अ०] बादे नमाज़ कह उठे
दीन को बेकली अबस ख़ुशकी में अबतरी अबस

बज गया डंका दहर में आले नबी[स०] के काम का
अपनों की भी निगाह में हो गया पादरी अबस

सबने ज़बाने हाल से इतनी तो बात सुन ही ली
ये हैं बराए रहबरी बाक़ी की रहबरी अबस

दर से हसन[अ०] के बटती हैं दोनों जहाँ की दौलतें
दर बदरी की ज़द में है हाए ये आदमी अबस

जिसमें नबीयो आल[अ०] की मदहो सना हो ऐ 'नदा'
है वही काम की फ़क़त बाक़ी तो शायरी अबस

मुख्य समाचार

नयी पहल का स्वागत

ओबामा के पैग़ाम पर ईरान के राष्ट्रपति डॉ० अहमदी नेजाद का रद्देअमल

एक आला ईरानी ओहदेदार ने अमरीकी राष्ट्रपति बाराक ओबामा की तरफ़ से अमरीका और ईरान ताल्लुक़ात के एक 'नयी पहल' की अपील का स्वागत किया है मगर उन्होंने कहा कि सिर्फ़ अलफ़ाज़ काफी नहीं हैं। ईरानी राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद के सलाहकार अली जवान फ़िक्र ने कहा कि अमरीका के लिए ज़रूरी है कि वह अपनी पिछली ग़लतियों के नतीजे में होने वाले नुक़सानों को दूर करे और ईरान के साथ ताल्लुक़ात में बुनियादी बदलाव लेकर आये। इससे पहले राष्ट्रपति बाराक ओबामा ने ईरानी त्योहार ''नौरोज़'' के मौक़े पर ईरानी अवाम के नाम एक वीडियो पैग़ाम में कहा था कि अगरचे दोनों मुल्कों के दरमियान ''संगीन इख़्तेलाफ़ात'' मौजूद हैं मगर वह उन इख़्तेलाफ़ों को सिफ़ारतकारी के ज़रिये हल करने के सिलसिले में इरादा रखते हैं। ईरानी राष्ट्रपति और ईरान के सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह सै० अली ख़ामेना-ई ने क़ौम के नाम नौरोज़ के मुबारकबादी पैग़ाम में राष्ट्रपति ओबामा की पेशकश का हवाला नहीं दिया। लेकिन आयतुल्लाह सै० अली ख़ामेना-ई ने कहा कि ईरान ने दुनिया को दिखा दिया है कि कोई उसका ऐटमी प्रोग्राम रोक नहीं सकता।

व्हाइट हाउस ने राष्ट्रपति के वीडियो पैग़ाम को फ़ारसी उनवान के साथ जारी किया था और राष्ट्रपति ओबामा ने सीधे तौर पर ईरानी अवाम और रहनुमाओं से ख़िताब किया था। उन्होंने कहा कि दोनो मुल्कों के बीच धमकियों से काम नहीं चलेगा बल्कि ईमानदारी और आपसी एहतेराम से काम होगा। राष्ट्रपति ओबामा का यह पैग़ाम उनसे पहले राष्ट्रपति जार्जबुश से बिल्कुल अलग है, जो ईरान को अलग-थलग करने की पॉलीसी पर चल रहे थे।

अमरीका की पॉलीसी में कोई बदलाव नहीं आया:

आयतुल्लाह सै० अली ख़ामेना-ई[मद०ज़ि०]

ईरान के सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह सै० अली ख़ामेना-ई ने कहा है कि इस्लामी जमहूरी ईरान के बारे में अमरीकी पॉलीसी में कोई बदलाव नहीं आया है। यह बात उन्होंने राष्ट्रपति ओबामा की तरफ से जारी किये गये वीडियो टेप, अपील के बाद कही है। आयतुल्लाह सै० अली ख़ामेना-ई ने 1979ई० के इस्लामी इन्क़ेलाब के बाद से ईरान के बारे में अमरीकी पॉलीसी पर सख़्त एतेराज़ करते हुए कहा कि अमरीका से 'पूरी दुनिया में नफ़रत' की जाती है और उसे दूसरे मुल्कों के अन्दुरूनी मामलों में दख़ल देना बन्द कर देना चाहिए। उन्होंने ईरानी नये साल (नौरोज़) के मौक़े पर कहा 'वह तबदीली का नारा देते हैं मगर अमली तौर से कोई बदलाव नज़र नहीं आता। हमने कोई बदलाव नहीं देखा। याद रहे कि ओबामा ने ईरान को दोनों पुराने दुश्मनों के बीच ताल्लुक़ात की नयी शुरुआत की पेशकश की थी।

आयतुल्लाह सै० अली ख़ामेना-ई ने कहा कि अमरीका के क़ौल 'में बदलाव काफ़ी नहीं है' हम देखेंगे और ग़ौर करेंगे कि आपके अन्दाज़ में क्या बदलाव आ रहा है। 'आपका अन्दाज़ बदलेगा तो हमारा भी बदलेगा'। वह मशहद शहर में तक़रीर कर रहे थे, लोग नारे लगा रहे थे- अमरीका मुर्दाबाद, अमरीका मुर्दाबाद। ईरान-अमरीका के ताल्लुक़ात सालों से ठण्डे चल रहे हैं। आयतुल्लाह ख़ामेना-ई ने ईरान के एटमी प्रोग्राम, इराक़, इस्राईल और दूसरे मामलों पर खुले तौर पर कहा कि अगर अमरीका उनके साथ अच्छे ताल्लुक़ात चाहता है तो उसे कुछ ज़्यादा करना होगा। अब अमरीका की नई इन्तिज़ामिया कहती है कि हम ईरान के साथ पिछली बातों को भुलाकर बातचीत करना चाहते हैं। 'वह कहते हैं हमने ईरान की तरफ हाथ आगे बढ़ाया है मगर यह हाथ किस तरह का है। अगर ये हाथ मख़्मल का कवर चढ़ा हुआ और हाथ लोहे का बना हुआ हो तो उसका कोई अच्छा मतलब नहीं निकलता।

इस्राईली फ़ौज के ख़िलाफ़

एक हज़ार से ज़्यादा जुर्मों की गवाहियाँ इकटठा

इस्राईली जंगी मुजरिमों को अदालत के कटहरे में लाने के लिए बनायी गयी कमेटी ने दुनिया की कई अदालतों में ग़ाज़ा जंग के हवाले से इस्राईली फ़ौजी कमाण्डरों के ख़िलाफ़ मुक़द्दमे दर्ज करने का एलान किया है। मिडिलईस्ट स्टडी सेण्टर की रिपोर्ट के मुताबिक़ कमेटी के चेयरमैन क़ाज़ी ज़ियाउल मदहून ने कहा है कि ग़ाज़ा जंग में फ़िलस्तीनी शहरियों के ख़िलाफ़ किये जाने वाले एक हज़ार से ज़्यादा जुर्मों की गवाहियाँ और सुबूत हासिल कर लिये गये हैं। इस्राईली जंगी मुजरिमों ने फिलस्तीनी शहरियों के ख़िलाफ यह जुर्म 27 दिसम्बर 2008ई० से जनवरी 2009ई० के आख़िर ज़माने तक किये। क़ाज़ी ज़ियाउल मदहून ने साफ़-साफ़ कहा कि जंगी जुर्मों के हवाले से दुनिया के कई मुल्कों की अदालतों में मुक़द्दमे दायर किये जा सकते हैं और ये एक आम क़ानूनी कार्यवाही है। कमेटी गवाह इकटठा करने, क़ानूनी व तकनीकी तहक़ीक़ात, बैनुलअक़वामी तन्ज़ीमों से राब्ता करने, हुकूमत से राब्तों, क़ानूनी मदद और मीडिया की सियासत निचली कमेटियों से मिलकर बनी है। क़ाज़ी ज़ियाउल मदहून ने कहा कि इस्राईली रहनुमाओं का मुहासबा करने के लिए इस वक़्त यूरोपी ग्रुप "एक इन्साफ़" से राब्ते किये जा रहे हैं। "एक इन्साफ़" ग्रुप में तीन सौ चालीस बैनुलअक़वामी इदारे शामिल हैं।

मुफ़्ती मुहम्मद अब्बास शोस्तरी के यौमे पैदाइश पर

सेमिनार

मश्हूर आलिमेदीन मुफ़्ती मुहम्मद अब्बास शोस्तरी मरहूम की पैदाइश के दो सौ साल मुकम्मल होने पर लखनऊ युनिवर्सिटी के ओरियन्टल अरबिक एण्ड परशियन विभाग की जानिब से यौमिया सेमिनार मुनअक़िद किया गया। ईरानी कल्चर हाउस, नई दिल्ली की मदद से डी०पी०ए० हाल में मुनअक़िद इस सेमिनार में मेहमाने खुसूसी की हैसियत क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी के अलावा ईरान से आए डॉ० गुलाम रज़ा महदवी और डॉ० करीम नजफ़ी (ईरानी कल्चर हाउस), शरीक हुए। मुक़र्रिरीन ने इस मौक़े पर मुफ़्ती मुहम्मद अब्बास शोस्तरी की हयात और इल्मी व अदबी ख़िदमात पर रौशनी डाली।

सेमिनार का आग़ाज़ क़ारी मुहम्मद मुस्लिम ने किया। इस मौक़े पर डॉ० तक़ी अली आबदी ने मुफ़्ती मुहम्मद अब्बास शोस्तरी की नात पेश की। सेमिनार का आग़ाज़ लखनऊ युनिवर्सिटी के वाइस चान्सलर प्रोफ़ेसर ए०एस० बरार के ख़िताब से हुआ। उन्होंने ईराने से आये मेहमान डॉक्टर गुलाम रज़ा महदवी, क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी और डॉ० करीम नजफ़ी के अलावा दूसरे मेहमानों का ख़ैरमक़दम किया। वाइस चान्सलर ने अपने ख़िताब में कहा कि हमें अपने पुरखों को याद रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि अदब हर ज़माने में एक ही जैसा रहता है और पढ़ने वाला या सुन्ने वाला अपनी ही ज़बान या ख़याल सोचता है।

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी ने अपने ख़िताब में कहा कि हिन्दुस्तानी फ़ारसी शायरों में जो ख़िदमात मुफ़्ती मुहम्मद अब्बास ने अन्जाम दीं वह बेमिसाल हैं, रिसर्च के तलबा ने भी इनकी तरफ कोई ख़ास ध्यान नहीं दिया है। उनकी ख़िदमात और हयात पर जो किताबें लिखी गयी हैं वह मेयारी नहीं हैं।

सेमिनार को ख़िताब करने वालों में मौलाना हमीदुल हसन और प्रोफ़ेसर अनीस अश्फ़ाक़ भी शामिल थे। प्रोफ़ेसर अनीस अश्फ़ाक़ ने अपनी तक़रीर में मुफ़्ती मुहम्मद अब्बास शोस्तरी की हयात और ख़िदमात पर रौशनी डाली। इस मौक़े पर मुफ़्ती मुहम्मद अब्बास की हयात से मुताल्लिक़ फ़ारसी, उर्दू और अंग्रेज़ी ज़बान में तीन किताबों का इजरा भी हुआ। तक़रीब की निज़ामत डॉ० तक़ी अली आब्दी और डॉ अरशद जाफ़री ने की। आख़िर में ईरानी मेहमान डॉक्टर क़ासिम मुरादी ने अपने मुल्क की जानिब से मेहमानों का शुक्रिया अदा किया।

अलीगढ़ में हज़रत गुफ़रानमआब^{रह०} और शिया उलमा के ख़िदमात पर सेमिनार

जमहूरी इस्लामी ईरान 'कल्चर हाउस' और शोब-ए-दीनियात अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के ज़ेरे एहतेमाम अलीगढ़ युनिवर्सिटी में बउनवान "आयतुल्लाह गुफ़रानमआब और शिया उलमा का इस्लामिक साइंस के फ़रोग़ में तआउन" सेमिनार मुनअक़िद हुआ जिसमें हिन्द व ईरान के स्कालरों ने शिरकत की। इस सेमिनार का आग़ाज़ तिलावते कलाम पाक से हुआ जिसमें हाफ़िज़ हामिद मियाँ, मुस्लिम युनिवर्सिटी ने तिलावत फ़रमायी। निज़ामत के फ़राएज़ प्रोफ़ेसर शाह मुहम्मद वसीम साहब ने अन्जाम दिये। सेमिनार के पहले सेशन में आयतुल्लाह गुफ़रानमआब की हयात और कारनामे पर लिखी गयी किताब की रस्मे इजरा वाइस चान्सलर प्रोफ़ेसर पी०के० अब्दुल अज़ीज़ और डॉ० करीम नजफ़ी कल्चरल काउन्सलर जमहूरी इस्लामी ईरान ने की। डॉ० करीम नजफ़ी ने कहा कि इस वक़्त ऐसा तरीक़-ए-तालीम अपनाने की ज़रूरत है जो मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और फ़िरक़ों को एक प्लेटफ़ार्म पर ला सके उन्होंने हिन्दुस्तान और ईरान के आपसी ताल्लुक़ात की तारीख़ तीन हज़ार साल क़दीम बतायी। उन्होंने आयतुल्लाहिल उज़मा सै० दिलदार अली गुफ़रानमआब^{रह०} की हयात पर तफ़सील से रौशनी डाली। वाइस चांसलर पी०के० अब्दुल अज़ीज़ ने कहा कि सरसैय्यद के ज़माने से ही शिया व सुन्नी दीनियात की पढ़ाई का नज़्म है उन्होंने कहा कि मुस्लिम दानिश्वर इस्लाम की साइंसी और सेक्युलर शबीह पेश करें। नेशनल सेमिनार के क्वारडीनेटर प्रोफ़ेसर अली मुहम्मद नक़वी ने कहा कि यह अफ़सोस की बात है कि मुख़्तलिफ मुस्लिम मुल्कों बल्कि मुस्लिम फ़िरक़ों के दरमियान राब्ते की कमी है वह एक दूसरे के बारे में नहीं जानते कि इस्लामी सक़ाफ़त और साइंस की तरक़्क़ी में किसका तआउन है उन्होंने कहा कि सरसैय्यद को माली तआउन फ़राहम कराने वालों की फेहरिस्त से यह पता चलता है कि शिया हज़रात ने किस तरह उनकी मुहिम में हिस्सा लिया था बाद के सेशनों में मुख़्तलिफ़ मक़ाला निगार हज़रात ने मुख़्तलिफ उनवानों पर मक़ाला पेश किया। प्रोफ़ेसर शाह मुहम्मद वसीम ने सैय्यिदुलउलमा को उर्दू उस्लूबे निगारिश, मौलाना रज़ा अब्बास साहब ने सैय्यदुल उलमा की तफ़सीर निगारी, मोहतरमा बिन्ते ज़हरा का मक़ाला 'हिन्दुस्तान में उर्दू के पहले मुफ़स्सिरे क़ुरआन आयतुल्लाह सै० अली इब्ने गुफ़रानमआब, हाफ़िज़ ख़ुर्शीद अली ने मु०र० आबिद का मज़मून 'सैय्यिदुलउलमा शख़्सी मरसियों के हवाले से' और मौलाना असीफ़ जाएसी ने हज़रत गुफ़रानमआब और उनके पाँच शोहर-ए-आफ़ाक़ फ़रज़न्दों पर मक़ाला पेश किया। सेमिनार के आख़िर में थियालोजी फेकल्टी के डीन प्रोफ़ेसर मसऊद आलम क़ासमी और सेमिनार के क्वारडिनेटर प्रोफ़ेसर अली मुहम्मद नक़वी ने हाज़िरीन का शुक्रिया अदा किया।

Permanent Namaz Timing As Per Lucknow Horizon

Month May 2009

मई	ज़ि० क़अदा	दिन	फ़ज्र	तुलूअ्	ज़ोहर	गुरुब	मग़रिब	लखनऊ से पहले		लखनऊ के बाद	
1	5	जुमा	4:05	5:28	12:04	6:39	6:49	इलाहाबाद	5	अहमदाबाद	32
2	6	सनीचर	4:04	5:27	12:04	6:39	6:49	आज़मगढ़	9	आगरा	12
3	7	इतवार	4:03	5:27	12:04	6:40	6:50	अयोध्या	5	इन्दौर	21
4	8	पीर	4:02	5:26	12:04	6:40	6:50	बाराबंकी	2	उन्नाव	2
5	9	मंगल	4:01	5:25	12:04	6:41	6:51	बस्ती	8	बदायूं	8
6	10	बुध	4:00	5:24	12:04	6:41	6:51	बनारस	8	बरेली	6
7	11	जुमेरात	3:59	5:23	12:04	6:42	6:52	बलिया	12	मुम्बई	23
8	12	जुमा	3:58	5:22	12:04	6:43	6:53	बहराइच	4	बैंगलोर	17
9	13	सनीचर	3:57	5:22	12:04	6:44	6:54	बांदा	6	भोपाल	14
10	14	इतवार	3:56	5:21	12:03	6:45	6:55	अकबरपुर	6	पीलीभीत	5
11	15	पीर	3:55	5:21	12:03	6:45	6:55	पटना	18	झांसी	10
12	16	मंगल	3:55	5:20	12:03	6:45	6:55	प्रतापगढ़	5	हैदराबाद	10
13	17	बुध	3:54	5:20	12:03	6:46	6:56	पुरनिया	27	दिल्ली	15
14	18	जुमेरात	3:53	5:19	12:03	6:46	6:56	जौनपुर	8	देहरादून	12
15	19	जुमा	3:52	5:18	12:03	6:47	6:57	दरभंगा	20	रामपुर	8
16	20	सनीचर	3:51	5:18	12:03	6:47	6:57	रांची	18	श्रीनगर	21
17	21	इतवार	3:51	5:18	12:03	6:48	6:58	छपरा	16	सहारनपुर	14
18	22	पीर	3:50	5:17	12:03	6:49	6:59	रायबरेली	4	सीतापुर	4
19	23	मंगल	3:50	5:17	12:03	6:49	6:59	सीवान	14	शाहजहाँपुर	4
20	24	बुध	3:49	5:16	12:03	6:50	7:00	24 परगना	30	अलीगढ़	12
21	25	जुमेरात	3:48	5:16	12:03	6:50	7:00	ग़ाज़ीपुर	11	फ़तेहपुर	3
22	26	जुमा	3:48	5:15	12:03	6:51	7:01	फ़ैज़ाबाद	5	कानपुर	3
23	27	सनीचर	3:47	5:15	12:03	6:52	7:02	कोलकाता	31	ग्वालियर	12
24	28	इतवार	3:47	5:15	12:03	6:52	7:02	खीरी	1	मद्रास	3
25	29	पीर	3:46	5:14	12:04	6:53	7:03	गोण्डा	4	मुरादाबाद	9
26	1 ज़ि० हिज्जा	मंगल	3:45	5:14	12:04	6:53	7:03	गोरखपुर	10	मेरठ	13
27	2	बुध	3:45	5:14	12:04	6:53	7:03	मऊ	11	मुज़फ़्फ़रनगर	12
28	3	जुमेरात	3:45	5:14	12:04	6:53	7:03	मुंगेर	12	नागपुर	16
29	4	जुमा	3:44	5:13	12:04	6:53	7:03	मिर्ज़ापुर	7	नैनीताल	6
30	5	सनीचर	3:44	5:13	12:04	6:53	7:03	मुज़फ़्फ़रपुर	19	हरदोई	4
31	6	इतवार	3:44	5:13	12:04	6:53	7:03	भागलपुर	19	भावनगर	36